प्रश्न :- बाल्यावस्था को परिभाषित कीजिए बाल्यावस्था में होने वाले प्रमुख विकासो का वर्णन कीजिए।

प्रस्तावना:-बाल्यवस्था वास्तव में मानव जीवन का स्वर्णिम समय होता है, जिसमें बालक का सर्वांगीण विकास होता है। शैशवावस्था के बाद 6 से 12 वर्ष की अवस्था को बाल्यावस्था कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने इस अवस्था को मानव विकास का अनोखा काल माना है!इस अवस्था को समझ पाना बहुत ही कठिन होता है, क्योंकि विकास की दृष्टि से यह जटिल अवस्था होती है। इस अवस्था में बालक में विभिन्न प्रकार के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक परिवर्तन आते हैं। इस अवस्था में बालक का शारीरिक विकास पहले 3 वर्षों में तेजी से होता है, और उसके बाद 6 वर्षों में धीमी से होता है!मनोवैज्ञानिकों ने बाल्यवस्था को दो भागों में बांटा है पूर्व बाल्यावस्था और उत्तर बाल्यावस्था 6 से 9 वर्ष की अवस्था को पूर्व बाल्यावस्था माना है। पूर्व बाल्यावस्था में बालक का शारीरिक विकास बहुत ही तेजी के साथ होता है, जबकि 9 से 12 वर्ष की अवस्था को उत्तर बाल्यावस्था माना गया है। इस अवस्था में बालक का शारीरिक विकास गति से होता है। फ्राइड के अनुसार इस अवस्था में बालक में तनाव की स्थिति समाप्त हो जाती है तथा बाहर की दुनिया को समझने लगता है यह अवस्था बालक के व्यक्तित्व के निर्माण की होती है। इस अवस्था में बालक में विभिन्न,आदतों, व्यवहारों, रूचियों, एवं इच्छाओं का निर्माण होता है। "गैंग-ऐज" (Gang - Age) इसी अवस्था का दूसरा नाम है ।अर्थात् इसी अवस्था में समूह - गतिविधियों का विकास बहु ही तेजी से होता है ।यह अवस्था बालक के व्यक्तित्व के निर्माण में होती है ।बालक में इस अवस्था में विभिन्न आदतों, रुचियों एवं इच्छाओं के प्रतिरूपों का निर्माण होता है।

बाल्यावस्था की परिभाषाएँ

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने बाल्यावस्था को अनेक प्रकार से परिभाषित किये हैं, जो इस प्रकार है :-

"**ब्लेयर जोन्स एवं सिपसन के अनुसार**","बाल्यावस्था वह समय

है, जब व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोण व मूल्यों और आदर्शों का बहु सीमा तक निर्माण होता है ।'

"**कोले के अनुसार**"," बाल्यावस्था जीवन का अनोखा - काल है ।'

"**रोस के अनुसार**", "बाल्यवस्था मिथ्या परिपक्वता का काल है ।'

बाल्यावस्था में शारीरिक विकास (PHYSICAL DEVELOPMENT IN CHILDHOOD):-

क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) के अनुसार, बाल्यावस्था में शारीरिक विकास निम्न प्रकार होता है

1. भार (Weight)– बाल्यावस्था में बालक के भार में पर्याप्त वृद्धि होती है। 12 वर्ष के अन्त में उसका भार 80 और 95 पौंड के बीच में होता है। 9 या 10 वर्ष की आयु तक बालकों का भार बालिकाओं से अधिक होता है। इसके बाद बालिकाओं का भार अधिक ना आरम्भ हो जाता है।

2. लम्बाई (Length)- बाल्यावस्था में 6 या 12 वर्ष तक शरीर की लम्बाई कम बढ़ती है। इन सब वर्षों में लम्बाई लगभग 2 या 3 इंच ही बढ़ती है।

3. सिर व मस्तिष्क (Head and Brain)- बाल्यावस्था में सिर के आकार में क्रमशः परिवर्तन होता रहता है। 5 वर्ष की आयु में सिर-प्रौढ़ आकार का 90% और 10 वर्ष की आयु में 95% होता है। बालक के मस्तिष्क के भार में भी परिवर्तन होता रहता है। 9 वर्ष की आयु में बालक के मस्तिष्क का भार उसके कुल शरीर के भार का 90% होता है।

4. हड्डियाँ (Bones) - बाल्यावस्था में हड्डियों की संख्या और अस्थीकरण अर्थात् दृढता में वृद्धि होती रहती है। इस अवस्था में हड्डियों की संख्या 270 से बढ़कर 350 हो जाती है।

5. दाँत (Teeth)- लगभग 6 वर्ष की आयु में बालक के दूध के दाँत गिरने और उनके बजाय स्थायी दाँत निकलने आरम्भ हो जाते हैं। 12 या 13 वर्ष तक उसके सब स्थायी दाँत निकल आते हैं, जिनकी संख्या लगभग 32 होती है। बालिकाओं के स्थायी दाँत बालकों से जल्दी निकलते हैं।

6. अन्य अंग (Other Organs)- इस अवस्था में माँसपेशियों का विकास धीरे-धीरे होता है। 9 वर्ष की आयु में बालक की माँसपेशियों का भार उसके शरीर के कुल भार का 27% होता है। हृदय की धड़कन की गति में निरन्तर कमी होती जाती है। 12 वर्ष की आयु में धडकन मिनट में 85 बार होती है। बालक के कन्धे चौड़े कूल्हे पतले और पैर सीधे और लम्बे होते हैं। बालिकाओं के कन्धे पतले, कूल्हे चौड़े और पैर कुछ अन्दर को झुके हुए होते हैं। 11 या 12 वर्ष की आयु में बालकों और बालिकाओं के यौनांगों का विकास तीव्र गति से होता है।

7. विकास का महत्त्व (Importance of Development)- बाल्यावस्था में बालक के लगभग सभी अंगों का विकास हो जाता है। फलस्वरूप, वह अपनी शारीरिक गति पर नियंत्रण करना जान जाता है, अपने सभी कार्य स्वयं करने लगता है और दूसरों पर निर्भर नहीं रह जाता है।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास (MENTAL DEVELOPMENT IN CHILDHOOD):-

क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) के अनुसार- "जब बालक लगभग 6 वर्ष का हो जाता है, तब उसकी मानसिक योग्यताओं का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है। उसमें रुचि, जिज्ञासा, निर्णय, चिन्तन, स्मरण और समस्या समाधान के गुणों का पर्याप्त विकास हो जाता है। विभिन्न आयु में वह अपने इन गुणों का इस प्रकार प्रदर्शन करता है ।

1. छठवाँ वर्ष-बालक बिना हिचके हुए 13-14 तक की गिनती सुना देता है, सरल प्रश्नों के उत्तर दे देता है और शरीर के विभिन्न अंगों के नाम बता देता है। यदि उसे कोई चित्र दिखाया जाय, तो वह उसमें बनी हुई वस्तुओं का वर्णन कर सकता है और उनमें समानताएँ एवं असमानताएँ भी बता सकता है।

2. सातवाँ वर्ष-बालक में दो वस्तुओं में अन्तर करने की शक्ति का विकास हो जाता है। वह लकड़ी और कोयला जहाज और मोटरकार में अन्तर बता सकता है। वह छोटी-छोटी घटनाओं का वर्णन, जटिल वाक्यों का प्रयोग और साधारण समस्याओं का समाधन खोजने का प्रयत्न करने लगता है।

3. आठवाँ वर्ष-बालक में छोटी कहानियों और कविताओं को अच्छी तरह दोहराने, 16 शद्वों के वाक्यों को बिना गलती किए हुए बोलने, एक पैरा की कहानी पर 5 या 6 प्रश्नों के उत्तर देने और प्रतिदिन की साधारण समस्याओं का समाध करने की योग्यता होती है।

4. नवाँ वर्ष- बालक को दिन, समय, तारीख, वर्ष और सिक्कों का ज्ञान होता है। वह 5-6 तुकान्त शद्वों को बताने और 6-7 शद्वों को उल्टे क्रम में दोहराने में सफल होता है। वह सामान्य शद्वों का प्रयोग करने लगता है और देखी हुए फिल्म की 60% बातें बता सकता है।

5. दसवाँ वर्ष-बालक तीन मिनट में 60-70 शद्व बोल सकता है और छोटी-छोटी कहानियों को याद करके सुना सकत है। उसे दैनिक जीवन के नियमों, परम्पराओं, सूचनाओं आदि का थोड़ा-बहुत ज्ञान हो जाता है।

6. ग्यारवा वर्ष- बालक में तर्क, जिज्ञासा और निरीक्षण की शक्तियों का पर्याप्त विकास हो जाता है। वह दो वस्तुओं में समानता और असमानता बता सकता है। वह पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों और कल-पुर्जों का निरीक्षण करके ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।

7. बारहवाँ वर्ष-बालक में तर्क और समस्या समाधान की शक्ति का अधिक विकास हो जाता है। उसमें कठिन शद्वों की व्याख्या करने और साधारण बातों के कारण बताने की योग्यता होती है। वह देखी हुई फिल्म की 75% बातें बता

सकता है।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास (EMOTIONAL DEVELOPMENT IN CHILDHOOD)

1. बालक के संवेग अधिक निश्चित और कम शक्तिशाली हो जाते हैं। वे बालक को शैशवावस्था के समान उत्तेजित नहीं कर पाते हैं; उदाहरणार्थ, 6 वर्ष की आयु में बालक का अपने भय और क्रोध पर नियंत्रण हो जाता है।

2. बालक के संवेगों में शिष्टता आ जाती है और उसमें उनका दमन करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। अतः वह अपने माता-पिता, शिक्षक और बड़ों के सामने उन संवेगों को प्रकट नहीं होने देता है, जिनको वे पसन्द नहीं करते हैं ।

3. बालक के संवेगात्मक विकास पर विद्यालय के वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है; उदाहरणार्थ- आदर्श, स्वतन्त्र और स्वस्थ वातावरण उसके संवेगों का परिष्कार करता है, जबकि भय, आतंक और कठोरता के वातावरण में ऐसा होना असम्भव है ।

4. बालक के संवेगात्मक विकास में शिक्षक का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है ।अप्रिय व्यवहार, शारीरिक दण्ड और कठोर अनुशासन में विश्वास करने वाला शिक्षक, बालक में मानसिक ग्रन्थियों का निर्माण कर देता है जो उसके संवेगात्मक विकास को विकृत कर देती हैं।

5. बाल्यावस्था में बालक विभिन्न समूहों का सदस्य होता है। इन समूहों में साधारणतः पारस्परिक घृणा, द्वेष और ईर्ष्या पाई जाती है। बालक इन अवांछनीय

संवेगों से प्रभावित हुए बिना नहीं बचता है। अतः वह दूसरे बालकों के प्रति अपने व्यवहार में इन संवेगों को व्यक्त करने लगता है।

6. एलिस क्रो (Alice Crow) के अनुसार- बालक अपने दोषों के परिणामों को सोचकर चिन्तित हो जाता है और अपने से अधिक भाग्यशाली बालकों से ईर्ष्या करता है। वह अपने प्रति परिवार के सदस्यों के व्यवहार को कठोर मानता है, क्योंकि उसके विचार से वे उसके कार्यों को समझ नहीं पाते हैं।

7. एलिस क्रो (Alice Crow) (p. 61) के अनुसार- "बालक सामान्य रूप से प्रसन्न रहता है और दूसरों के प्रति उसका विद्वेष अस्थायी होता है।"

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास (SOCIAL DEVELOPMENT IN CHILDHOOD):-

हरलॉक (Hurlock) ने बाल्यावस्था में बालक के सामाजिक विकास का निम्न चित्र अंकित किया है-

1. लगभग 6 वर्ष की आयु में बालक प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश करता है। यह वह एक नए से अनुकूलन करना, सामाजिक कार्यों में भाग लेना और नए मित्र बनाना सीखता है।

2. अनुकूलन करने के उपरान्त, बालक के व्यवहार में उन्नति और परिवर्तन आरम्भ हो जाता है। फलस्वरूप, उसमें स्वतन्त्रता, सहायता और उत्तरदायित्व के गुणों का विकास होने लगता है।

3. विद्यालय में बालक किसी-न-किसी टोली का सदस्य हो जाता है। यह टोली उसके वस्त्रों के रूपों, खेल के प्रकारों और उचित - अनुचित के आदर्शों को निर्धारित करती है। इस प्रकार, बालक के सामाजिक विकास को एक नवीन दिशा प्राप्त होती है।

4. टोली, बालक में अनेक सामाजिक गुणों का विकास करती है। इन गुणों पर प्रकाश डालते हुए हरलॉक (Hurlock) (p. 293) ने लिखा है- " टोली बालक के आत्म-नियंत्रण, साहस, न्याय, सहनशीलता, नेता के प्रति भक्ति, दूसरों के प्रति सद्भावना आदि गुणों का विकास करती है।" 5. क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) के अनुसार इस अवस्था में बालक अपने शिक्षक का सम्मान तो करता है, पर उसका परिहास करने की अपनी प्रवृत्ति का दमन नहीं कर पाता है। 6. क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) के अनुसार इस अवस्था में बालक को अपने प्रिय कार्यों (Hobbies) में बहु अधिक रुचि हो जाती है, पर बालकों और बालिकाओं के इन कार्यों में स्पष्ट अन्तर दिखाई देने

लगता है, उदाहरणार्थ, बालकों को जीवनियाँ पढ़ने और बालिकाओं को वा यंत्र बजाने में रुचि होती है।

7. एलिस क्रो (Alice Crow) के अनुसार बालक में नई बातों की खोज करने की रुचि उत्पन्न हो जाती है। वह अपनी टोली, पडौस विद्यालय और अन्य स्थानों के व्यक्तियों के सम्बन्ध में नई बातों की खोज करता है और अपने साथियों को उन्हें बताने में गर्व तथा आनन्द का अनुभव करता है।

8. क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) ने लिखा है- " 6 से 10 वर्ष तक बालक अपने वांछनीय या अवांछनीय व्यवहार में निरन्तर प्रगति करता रहता है। वह बहुधा उन्हीं कार्यों को करता है जिनके किये जाने का कोई उचित कारण नहीं जान पड़ता है।"

निष्कर्ष:- उपयुक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है बाल्यावस्था में होने वाले प्रमुख विकासों में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण योगदान है। यदि बालक का शारीरिक विकास प्रभावित होगा तो उसका मानसिक विकास का भी प्रभावित होगा! क्योंकि विकास के विभिन्न आयाम आपस में जुड़े हुए होते।

TECH STUDY